विश्व हिंदी समाचार

(विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक प्रकाशन)

वर्ष : 5 अंक: 18 जून, 2012

विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यकारिणी बोर्ड की तृतीय बैठक

विश्व हिंदी सचिवालय की कार्यकारिणी बोर्ड की तृतीय बैठक 25 जून 2012 को मॉरीशस में संपन्न हुई । इस बैठक की सह-अध्यक्षता श्रीमती प्रेमिला ओबिलक, तथा महामहिम श्री मधुसूदन गणपति ने की । बैठक में सचिवालय के कार्यों व भावी योजनाओं पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए ।

शेष पृ.2

www.vishwahindi.com
विश्व हिंदी सचिवालय के वेबसाईट का उद्‌घाटन

मॉरीशस में हिंदी आई.सी.टी., ई-पत्रकारिता तथा ब्लॉगिंग पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी-कार्यशाला

मॉरीशस में हिंदी आई.सी.टी., ई-पत्रकारिता तथा ब्लॉगिंग पर 23 से 27 अप्रैल 2012 तक एक दिवसीय संगोष्ठी तथा चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन । विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में हिंदी से जुड़ी तीन पीढ़ियों ने भाग लिया ।

शेष पृ.4-5

भारत के राष्ट्रपति ने किया 28 हिंदी सेवियों का सम्मान

केंद्रीय हिंदी संस्थान का हिंदी सेवी सम्मान समारोह राष्ट्रपति भवन में संपन्न हुआ । महामहिम राष्ट्रपति के हाथों भारत और विदेश के हिंदी सेवियों का सम्मान ।

शेष पृ.3

ताशकंद में पाँचवा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन संपन्न

सृजन-सम्मान, छत्तीसगढ़ और प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में पाँचवा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन 24 जून से 1 जुलाई तक उज़्बेकिस्तान की राजधानी ताशकंद में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ । सम्मेलन में भारत सहित अन्य देशों के हिंदी लेखकों, शिक्षकों तथा सेवियों ने भाग लिया ।

शेष पृ.6

दक्षिण अफ्रीका में 9वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन : 22–24 सितंबर 2012

भारत के विदेश मंत्रालय दक्षिण अफ्रीका में हिंदी शिक्षण संघ एवं अन्य भागीदारों के सहयोग से 22-24 सितंबर 2012 को जोहानस्बर्ग, दक्षिण अफ्रीका में 9वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित कर रहा है ।

शेष पृ.3

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कहानी प्रतियोगिता

विश्व हिंदी दिवस 2013 के उपलक्ष्य में विश्व हिंदी सचिवालय एक *'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी कहानी प्रतियोगिता'* का आयोजन करने वाला है । सचिवालय के वेबसाइट www.vishwahindi.com पर इसपर संपूर्ण जानकारी अवश्य देखें ।

विश्व हिंदी सचिवालय की कार्यकारिणी बोर्ड की तृतीय बैठक

विश्व हिंदी सचिवालय की कार्यकारिणी बोर्ड की तृतीय बैठक 25 जून 2012 को दोमैन ले पाई, मॉरीशस में संपन्न हुई । इस बैठक की सह-अध्यक्षता मॉरीशसीय पक्ष की ओर से श्रीमती प्रेमिला ओबिलक, वरिष्ठ मुख्य कार्यकारी अधिकारी, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय तथा भारतीय पक्ष की ओर से महामहिम श्री मधुसूदन गणपति, सचिव, विदेश मंत्रालय ने की ।

मॉरीशस नेशनल असेंब्ली में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना से संबंधित अधिनियम नवंबर, 2002 में पारित किया गया । इसी अधिनियम के अंतर्गत सचिवालय के कार्यकारिणी बोर्ड के गठन की भी व्यवस्था की गई थी । सचिवालय के कार्यकारिणी बोर्ड का उत्तरदायित्व सचिवालय के शासी परिषद द्वारा निर्धारित नीतियों का कार्यान्वयन, सचिवालय का प्रशासन तथा उसका सामान्य नियंत्रण करना है ।

मॉरीशस सरकार की ओर से कार्यकारिणी बोर्ड के सदस्य श्री वी. मंगर, मिनिस्टर काउंसिलर, विदेश मंत्रालय, श्री एम. सीबा, स्थायी सचिव, प्रधान मंत्री कार्यालय, श्री चेतनदेव भगन, स्थायी सचिव, कला व संस्कृति मंत्रालय तथा श्री जी. गणेश, स्थायी सचिव, शिक्षा व मानव संसाधन मंत्रालय ने बैठक में अपनी सक्रिय भागीदारी दी । भारतीय पक्ष की ओर से कार्यकारिणी बोर्ड के सदस्य श्री टी. पी. सीताराम, भारतीय उच्चायुक्त, श्री अनंत कुमार सिंह, संयुक्त सचिव, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, श्रीमती अरविंद मंजीत सिंह, संयुक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय तथा श्री अनूप.के. मुद्गल, संयुक्त सचिव, विदेश मंत्रालय भी बैठक में उपस्थित थे ।

कार्यकारिणी बोर्ड के मनोनीत सदस्यों के अलावा सहयोजित सदस्यों में मॉरीशसीय पक्ष की ओर से श्री एम. वरादन, प्रधान सहायक सचिव, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, श्री मेधा गणपत, प्रधान सहायक सचिव, शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय तथा सुश्री अनुपमा चमन, कार्यवाहक प्रधान संस्कृति अधिकारी ने बैठक में भाग लिया । तथा भारतीय पक्ष की ओर से श्री प्रशांत पीसे, भारतीय उप-उच्चायुक्त, श्रीमती सुनीति शर्मा, उप-सचिव (हिंदी), विदेश मंत्रालय तथा श्री मीमांसक, द्वितीय सचिव, भारतीय उच्चायोग ने बैठक में भाग लिया ।

सचिवालय की महासचिव, श्रीमती पूनम जुनेजा तथा उप-महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने भी बैठक में अपनी भागीदारी दी ।

बैठक की शुरूआत सह-अध्यक्षों के वक्तव्य से हुआ । बैठक के सह-अध्यक्षों ने सचिवालय के कार्यों की सराहना की और इस बात पर संतुष्टि जताई कि हिंदी भाषा के उन्नयन में सचिवालय अपनी वैश्विक भूमिका निभाने के प्रति दृढ़ है । हिंदी की प्रगति को लेकर विश्व भर को सचिवालय से जो आशाएँ हैं, उसमें सचिवालय सफलता के पथ पर अग्रसर है । सचिवालय अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ठोस कार्य कर रहा है, यह बात प्रशंसनीय है ।

तत्पश्चात सचिवालय की महासचिव, श्रीमती पूनम जुनेजा ने अपनी रिपोर्ट सुनाई । अपनी रिपोर्ट में महासचिव ने 14-15 मई 2009 में हुई कार्यकारिणी बोर्ड की पिछली से लेकर अब तक सचिवालय से संबंधित गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत किया । सचिवालय के बारे में संक्षिप्त पृष्ठभूमि बाँधते हुए उन्होंने सचिवालय की ढांचाई व्यवस्था तथा उसके उद्देश्य संबंधी कार्यक्रमों की रिपोर्ट दी ।

श्रीमती जुनेजा ने अपनी रिपोर्ट के अंत में कहा - ''*अपने सीमित संसाधनों से जो भी कुछ विश्व हिंदी सचिवालय कर पाया है उसने किया है । उसकी उपलब्धियों का श्रेय उसकी अपनी टीम के अलावा विशेष रूप से भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के शिक्षा मंत्रालय और संस्कृति मंत्रालय को भी जाता है । यह भी सत्य है कि उद्देश्य प्राप्ति के लिए कदम उठाये गए हैं, परंतु मंज़िल तक पहुँचने के लिए अभी सचिवालय को बहुत अधिक मेहनत और कार्यकारिणी बोर्ड को पूर्ण सहयोग देने की आवश्यकता है । शासी परिषद और कार्यकारिणी बोर्ड के मार्गदर्शन और सहयोग से, सचिवालय के संसाधन पुष्ट होंगे और सचिवालय के अधिकारियों के बढ़े हुए मनोबल से बहुत कुछ और भी हो पाएगा ।*''

बैठक के दौरान सचिवालय के कार्यक्रम व गतिविधियों, सचिवालय में नए पोस्ट का निर्माण, सचिवालय का स्ट्रेटेजिक योजना आदि को लेकर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए । बहुत जल्द सचिवालय अपने स्थायी कर्मचारियों के साथ और नए भवन के निर्माण के बाद अपने उद्देश्यों की पूर्ति में अधिक गति ला पाएगा ।

बैठक के अंत में विश्व हिंदी सचिवालय के नए वेबसाइट www.vishwahindi.com का लोकार्पण श्रीमती प्रेमिला ओबिलक और महामहिम श्री मधुसूदन गणपति जी के हाथों हुआ ।

बैठक का समापन श्रीमती जुनेजा तथा श्री सुखलाल द्वारा धन्यवाद ज्ञापन से हुआ तथा भारतीय और मॉरीशसीय पक्षों के बीच स्मृति चिह्नों व भेंट का आदान प्रदान भी हुआ ।

भारत की राष्ट्रपति द्वारा 28 हिंदी सेवियों को हिंदी सेवी सम्मान

अपनी रचनात्मकता के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी का प्रचार-प्रसार करने वाले हिंदी प्रेमियों को राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल ने हिंदी सेवी सम्मान से अलंकृत किया ।

राष्ट्रपति भवन में कुछ अलग ही माहौल था । यहाँ देश और दुनिया के कोने-कोने से शिक्षा और विज्ञान, फ़िल्म और साहित्य, रंगमंच और पत्रकारिता के क्षेत्र के कुछ चमकते हुए सितारे इकट्ठे हुए थे । मौका था केंद्रीय हिंदी संस्थान के हिंदी सेवी सम्मान समारोह का । संस्थान ने वर्ष 2008 और 2009 के लिए घोषित इन पुरस्कारों के वितरण के लिए यह समारोह आयोजित किया था । सन् 2008 के लिए गिरीश कर्नाड, श्याम बेनेगल, प्रो. माधुरी छेड़ा, बल्ली सिंह चीमा (गंगाशरण सिंह पुरस्कार), पंकज पचौरी, विनोद अग्निहोत्री (गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार), प्रो. यशपाल, मुहम्मद खलील (आत्माराम पुरस्कार), नंदकिशोर आचार्य, विजय बहादुर सिंह (सुब्रमण्यम भारती पुरस्कार), प्रो. गोपाल राय, डॉ. विमलेश कांति वर्मा (महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार), हरमन वान ओल्फ़न (विदेशों में हिंदी के प्रचार के लिए डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार) तथा श्रीमती पूर्णिमा वर्मन को विदेशों में हिंदी के लिए समर्पित प्रवासी भारतीयों की श्रेणी में पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार प्रदान कर राष्ट्रपति प्रतिमा देवी सिंह पाटील ने सम्मानित किया । इसी तरह सन् 2009 के लिए संस्थान की ओर से प्रो. याई. लक्ष्मी प्रसाद, मधुर भंडारकर, डॉ. दामोदर खड़से, प्रो. चमनलाल सप्रु (गंगाशरण सिंह पुरस्कार), ब्रजमोहन सिंह बख़्शी, बलराम (गणेश शंकर सांकृत्यायन पुरस्कार), प्रो. ली जंग हो (विदेशों में हिंदी के प्रचार के लिए डॉ. जॉर्ज ग्रियर्सन पुरस्कार) तथा डॉ. सुरेंद्र गंभीर को विदेशों में हिंदी के लिए समर्पित प्रवासी भारतीयों की श्रेणी में पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण पुरस्कार राष्ट्रपति के हाथों प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

इस भव्य सम्मान समारोह में मानव संसाधन विकास मंत्री तथा संस्थान के

अध्यक्ष कपिल सिब्बल, संस्थान के उपाध्यक्ष प्रो. अशोक चक्रधर, केंद्रीय राज्य मंत्री पुरंदेश्वरी देवी, संस्थान के निदेशक प्रो. मोहन, दीपक बोहरा, लक्ष्मीशंकर वायपेयी, विजयकुमार मल्होत्रा, देव स्वरूप, अनंत कुमार सिंह, गिरिराजशरण अग्रवाल, बागेश्वरी तथा महेश भारद्वाज आदि सैकड़ों सुधीजन उपस्थित थे । उल्लेखनीय है कि केंद्रीय हिंदी संस्थान की यह योजना सन् 1989 में आरंभ हुई थी । इसके तहत राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के उन्नयन, विकास और प्रचार-प्रसार में उत्कृष्ट भूमिका निभाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत 14 विद्वानों को संस्थान की ओर से भारत के राष्ट्रपति द्वारा एक लाख रुपए, शॉल तथा प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया जाता है । इस वर्ष दूरदर्शन ने राष्ट्रपति भवन में हुए इस कार्यक्रम का सीधा प्रसारण किया था ।

सुरेंद्र अग्निहोत्री

दक्षिण अफ़्रीका में 9वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन 22-24 सितंबर 2012

भारत के विदेश मंत्रालय दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी शिक्षण संघ एवं अन्य भागीदारों के सहयोग से 22-24 सितंबर 2012 को जोहानस्बर्ग, दक्षिण अफ़्रीका में 9वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन आयोजित कर रहा है । 9वें विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी के प्राचीन एवं आधुनिक पहलुओं से संबंधित परंपरागत और समसामयिक दोनों प्रकार के विषयों पर चर्चाएँ होंगी । सम्मेलन का विषय '*भाषा की अस्मिता और हिंदी का वैश्विक संदर्भ*' रखा गया है । सम्मेलन में नौ शैक्षिक सत्र होंगे । शैक्षिक सत्रों के विषय इस प्रकार होंगे :

- महात्मा गांधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का संदर्भ
- हिंदी : फ़िल्म, रंगमंच और मंच की भाषा
- सूचना प्रौद्योगिकी : देवनागरी लिपि और हिंदी का सामर्थ्य
- लोकतंत्र और मीडिया की भाषा के रूप में हिंदी
- विदेश में भारत : भारतीय ग्रंथों की भूमिका
- ज्ञान-विज्ञान और रोज़गार की भाषा के रूप में हिंदी
- हिंदी के विकास में विदेशी/प्रवासी लेखकों की भूमिका
- हिंदी के प्रसार में अनुवाद की भूमिका
- दक्षिण अफ़्रीका में हिंदी शिक्षा-युवाओं का योगदान

जोहानस्बर्ग में 9वाँ विश्व हिंदी सम्मेलन भारत के माननीय प्रधान मंत्री जी के अनुमोदन से आयोजित किया जा रहा है । सम्मेलन संबंधी व्यवस्थागत कार्य की निगरानी करने तथा मार्गदर्शन करने के लिए माननीय विदेश राज्य मंत्री श्रीमती प्रनीत कौर की अध्यक्षता में एक संचालन समिति का गठन किया गया है । दक्षिण अफ़्रीका में भी प्रीटोरिया में भारत के उच्चायुक्त महामहीम श्री वीरेंद्र गुप्ता की अध्यक्षता में एक संचालन समिति गठित की गई है । दक्षिण अफ़्रीका में गठित समिति में हिंदी के प्रचार-प्रसार से जुड़े विभिन्न स्थानीय संगठन और संस्थान सदस्य रूप में शामिल हैं । प्रीटोरिया में भारत के उच्चायुक्त महामहिम श्री विरेंद्र गुप्ता स्थानीय संचालन समिति के संरक्षक हैं और इस कार्य में जोहानस्बर्ग स्थित भारत का प्रधान कौंसलावास और भारतीय सांस्कृतिक केंद्र उनका सहयोग कर रहा है ।

विश्व शांति, अहिंसा, समानता और संपूर्ण मानव जाति के न्याय के लिए लंबे समय तक महात्मा गांधी द्वारा और उनके जीवन से प्रभावित दक्षिण अफ़्रीका के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. नेल्सन मंडेला द्वारा चलाए गए संघर्ष को देखते हुए सम्मेलन के उद्‌घाटन स्थल का नाम गांधीग्राम, पूर्ण सत्र हॉल का नाम नेल्सन मंडेला सभागार तथा अन्य सत्रों वाले स्थलों का नाम शांति, सत्य, अहिंसा, नीति और न्याय रखा गया है ।

9वें विश्व हिंदी सम्मेलन की वेबसाईट पर अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है ।

http://vishwahindisammelan.nic.in/Homepage.htm

मॉरीशस में हिंदी आई.सी.टी., ई-पत्रकारिता तथा ब्लॉगिंग पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी-कार्यशाला

मॉरीशस में हिंदी आई.सी.टी., ई-पत्रकारिता तथा ब्लॉगिंग पर 23 से 27 अप्रैल 2012 तक एक दिवसीय संगोष्ठी तथा चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन राजीव गाँधी साईंस सैंटर के भव्य सभागार में किया गया । इस संगोष्ठी-कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य हिंदी लेखकों, छात्रों, अध्यापकों, शिक्षाविदों और हिंदी भाषा के अन्य प्रयोगकर्ताओं को हिंदी और आई.सी.टी. के क्षेत्र के नवीनतम उपलब्धियों और प्रौद्योगिकी के बारे में परिचित कराना था ताकि उन्हें अपने खुद के ब्लॉग, ई-पत्रिका और वेबसाइट बनाने की दिशा में सही प्रशिक्षण के साथ प्रेरित किया जा सके और अंततः इंटरनेट पर हिंदी भाषा को बढ़ावा दिया जा सके । संगोष्ठी-कार्यशाला का संचालन करने के लिए तीन हिंदी विशेषज्ञ, श्री बालेंदु दाधीच, श्री ललित कुमार तथा श्रीमती पूर्णिमा वर्मन सक्सेना को आमंत्रित किया गया था ।

उद्घाटन

सोमवार 23 अप्रैल को आयोजित उद्घाटन समारोह से संगोष्ठी का आरंभ हुआ । इस अवसर पर मॉरीशस के शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे । सचिवालय की महासचिव श्रीमती पूनम जुनेजा ने कार्यक्रम का आरंभ करते हुए सभी गणमान्य अतिथियों का स्वागत किया । मॉरीशस में महामहिम भारतीय उच्चायुक्त का प्रतिनिधित्व करते हुए भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव (शिक्षा व भाषा), श्री मीमांसक ने मॉरीशस सरकार और भारत सरकार के सौजन्य में कार्यरत विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यों की सराहना की और माननीय डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने समारोह के मुख्य अतिथि का दायित्व संभाला । शिक्षा मंत्री ने विश्व हिंदी सचिवालय के प्रयास की सराहना की ।

संगोष्ठी

उद्घाटन समारोह के पश्चात हिंदी संगठन के प्रधान श्री राजनारायण गति जी की अध्यक्षता में संगोष्ठी का प्रथम सत्र लगा । हिंदी के सभी क्षेत्रों में आधुनिक प्रौद्योगिकी की आवश्यकता विषय पर महात्मा गाँधी संस्थान में हिंदी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक श्री कुमारदत्त गुदारी ने अपने विचार व्यक्त किए । इसी पर बात करते हुए विश्व प्रसिद्ध हिंदी आई.सी.टी. के विशेषज्ञ श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने हिंदी और आई.सी.टी. विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए । इसके पश्चात डी.ए.वी. डिग्री कॉलेज के निदेशक डॉ. उदय नारायण गंगू की अध्यक्षता में दूसरा सत्र चला । इस सत्र की प्रथम वक्ता, अनुभूति-अभिव्यक्ति जाल स्थल की संपादक, शारजाह से पधारी श्रीमती पूर्णिमा वर्मन सक्सेना ने हिंदी मीडिया, पत्रकारिता और आई.सी.टी. विषय पर बोलते हुए कहा – *"सूचना तकनीक एवं वैश्वीकरण का आपस में घनिष्ट संबंध है । दोनों का विकास एक दूसरे पर निर्भर है । लेकिन तकनीक का विकास मानवीय पक्ष को ध्यान में रखकर हो, यह भी बहुत आवश्यक है ।"* हिंदी साहित्य और आई.सी.टी. विषय के चर्चित ब्लॉगर और कविता कोश के संस्थापक श्री ललित कुमार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए यह बताया कि हिंदी साहित्य अब इंटरनेट में किस व्यापकता में मौजूद है और किस प्रकार इंटरनेट पर नवीन रचनाएँ प्रकाशित हो रही हैं ।

कार्यशाला – 24 अप्रैल

संगोष्ठी के समापन के पश्चात दूसरे दिन मंगलवार 24 अप्रैल की सुबह श्री ललित कुमार की प्रस्तुति में ***आई.सी.टी. एक परिचय*** विषय द्वारा कार्यशाला का आरंभ हुआ । इस सत्र में उपस्थित प्रतिभागियों को आई.सी.टी. के अर्थ, उसके विभिन्न रूप, उसकी उपयोगिता और खासकर उसके प्रभाव से परिचित कराया गया । उसके पश्चात हिंदी और आई.सी.टी. : संभावनाएँ विषय पर श्रीमती पूर्णिमा वर्मन ने अपने विचार व्यक्त किए । प्रतिभागियों को हिंदी के माध्यम से आई.सी.टी. क्षेत्र से जुड़ने की विभिन्न संभावनाओं और तरीकों का ज्ञान मिला । इसके पश्चात ***यूनिकोड : इतिहास और प्रयोग*** विषय पर श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने प्रस्तुतीकरण किया । प्रतिभागियों को यह ज्ञात हुआ कि हिंदी अक्षर कैसे कंप्यूटर स्क्रीन पर दिख सकते हैं और इनके निर्माण के पीछे किस तरह के कार्य होते हैं । इस दिन के अंतिम सत्र

तक आते-आते प्रतिभागियों ने हिंदी में टंकन विधियाँ, सोफ्टवेयर और उनके अधिष्ठापन विधियों को समझने के पश्चात उनको अमल में लाना सीख लिया था ।

25 अप्रैल

बुधवार 25 अप्रैल को श्री बालेंदु शर्मा दाधीच ने ***आपके पी.सी. पर हिंदी (प्रोग्राम, सॉफ्टवेयर, फ्रीवेयर, फॉन्ट)*** विषय प्रस्तुत करते हुए हिंदी-आई.सी.टी. को प्रतिभागियों के और करीब ला दिया । फिर प्रतिभागियों को जिस विषय की प्रतीक्षा थी, वह विषय ***(हिंदी ई-पत्रिका का निर्माण और प्रबंधन)*** श्रीमती पूर्णिमा वर्मन ने प्रस्तुत किया । इसमें प्रतिभागियों ने उन सभी पहलुओं और कदमों को सीखा जिनको ध्यान में रखते हुए अच्छी ई-पत्रिका या ब्लॉग बनाए

जा सकते हैं । जलपान के पश्चात सभी प्रतिभागियों ने अपनी-अपनी टोली के साथ मिलकर अपना ब्लॉग-निर्माण शुरू किया । इस दिलचस्प प्रक्रिया में विशेषज्ञों ने भी प्रतिभागियों का हौसला बढ़ाया और पग-पग पर उनका साथ दिया । देखते-देखते हिंदी के ब्लॉग बनकर तैयार होने लगे ।

सांस्कृतिक संध्या

25 अप्रैल की शाम को इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र में आयोजित इस अनौपचारिक शाम में भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री टी.पी. सीताराम, कला एवं संस्कृति मंत्रालय की वरिष्ठ संस्कृति अधिकारी सुश्री अनुपमा चमन, तीनों विशेषज्ञ श्रीमती पूर्णिमा वर्मन सक्सेना, श्री बालेंदु शर्मा दाधीच, श्री ललित कुमार तथा संगोष्ठी-कार्यशाला के प्रतिभागी भी उपस्थित थे । इस अवसर पर मॉरीशस ब्रॉडकास्टिंग कारपोरेशन की ओर से बेस्ट एफ़.एम. की टीम उपस्थित थी । अल्पाहार के पश्चात कवि सम्मेलन भी चला जिसमें तीनों विशेषज्ञों ने अपनी कविताओं से समागार को रंगों से भर दिया । प्रतिभागी के रूप में आए श्री राजेश कुमार श्रीवास्तव तथा डॉ. हेमराज सुंदर के अतिरिक्त श्री विनय गुदारी और श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने भी अपनी कविताएँ सुनाईं ।

26 अप्रैल

26 अप्रैल को श्री ललित कुमार ने ***वेब और सोशल नेटवर्किंग साईट पर हिंदी (उपलब्ध साईट, हिंदी में सहभागिता)*** विषय पर बात की । फ़ेसबुक, ब्लॉगर, ट्वीटर आदि सोशल नेटवर्किंग साईटों पर हिंदी की उपस्थिति को दर्शाते हुए ललित जी ने बताया कि किस प्रकार हिंदी में इनका प्रयोग हो सकता है । इसके आर्थिक पक्ष को भी इस सत्र में परखा गया । श्री बालेंदु ने हिंदी वेबसाईट के निर्माण और प्रबंधन पर बात की जिससे प्रतिभागियों को प्रेरणा मिली और साथ ही साथ हिंदी वेबसाईट बनाने के तरीकों पर अधिक जानकारी भी मिल पाई । इस सत्र के बाद प्रतिभागियों का यह भ्रम मिट गया कि वेब-निर्माण एक कठिन प्रक्रिया है ।

27 अप्रैल

27 अप्रैल को श्री ललित कुमार ने अधिक विस्तार के साथ हिंदी वेबसाईट के निर्माण पर प्रकाश डालते हुए प्रतिभागियों के प्रश्नों का जवाब दिया । फिर श्रीमती पूर्णिमा वर्मन ने ***सोशल नेटवर्किंग साईट पर हिंदी पृष्ठ का निर्माण और प्रबंधन (दिशानिर्देश, नीतियाँ, नियम, संभावनाएँ)*** विषय पर अपने विचार व्यक्त किए । ये सभी मुख्य बातें बताई गईं जो योजना से पूर्व और योजना पूरी हो जाने के पश्चात ध्यान देने योग्य होती हैं । कार्यशाला की सफ़ल समाप्ति पर विश्व हिंदी सचिवालय ने अंतर्राष्ट्रीय हिंदी ब्लॉगिंग तथा ई-पत्रकारिता प्रतियोगिताओं की घोषणा की जो आने वाले दिनों में आयोजित किए जाएँगे और जिनमें अच्छे ब्लॉग का निर्माण व प्रबंधन तथा ई-पत्रिका का निर्माण करने वाले को पुरस्कृत भी किया जाएगा ।

समापन समारोह

27 अप्रैल को ही अपराह्न 3 बजे समापन समारोह का आयोजन किया गया । इस अवसर पर विशेष रूप से उच्च शिक्षा, विज्ञान, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री माननीय डॉ. राजेश्वर जीता उपस्थित थे । अपने स्वागत भाषण में श्रीमती पूनम जुनेजा ने सभी का स्वागत करते हुए विशेषज्ञों की विद्वता तथा प्रतिभागियों के श्रम की प्रशंसा की और श्री मीमांसक ने कार्यशाला की सफ़लता का हर्ष अभिव्यक्त किया । तत्पश्चात कार्यशाला में प्राप्त अनुभवों के अनुरूप प्रतिभागियों ने अपने अनुभव बाँटते हुए इस कार्यशाला में प्राप्त ज्ञान को अपनी भावी योजनाओं में प्रयोग करने का हर्ष भी अभिव्यक्त किया । कार्यशाला में प्राप्त अनुभवों के अनुरूप प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं पर एक वीडियो प्रस्तुति की गई । इस क्लिप में प्रतिभागियों ने अपने अनुभव बाँटते हुए इस कार्यशाला की प्रासंगिकता को सराहा । श्री बालेंदु, श्रीमती पूर्णिमा वर्मन तथा श्री ललित कुमार के निर्देशन में प्रतिभागियों की अलग-अलग 12 टोलियाँ बनी थीं और हरेक टोली ने अपने हिंदी ब्लॉग का निर्माण किया जिनपर विशेषज्ञों ने पावर पॉइंट प्रस्तुति की । मौके पर मंत्री माननीय डॉ. राजेश्वर जीता ने कहा, *"विश्व हिंदी सचिवालय ने इस सप्ताह जो काम किया, उससे हमारे हिंदी स्नातकों को दो तकनीक मिले हैं जिनके ज़रिए वे अच्छे हिंदी भाषी ही नहीं, बल्कि भविष्य में अच्छे पेशेवर भी बन पाएँगे । यही बात बाकि सभी प्रतिभागियों पर भी लागू होती है । आप लोगों के बीच प्राध्यापक, प्राथमिक-माध्यमिक पाठशालाओं के अध्यापक, आचार्य गण, लेखक, सरकारी कर्मचारी... सभी ने इस में भाग लिया... इस तरह के आयोजन आप सभी को अपने काम को और अधिक प्रोफ़ैशनल ढंग से करने का अवसर देते हैं । यह कार्यशाला बहुत क्षेत्रों के लोगों की मदद करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर काम कर रही है... ।"*

प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए माननीय मंत्री ने कहा- *"आपके कामों को देखकर मैं यह कह सकता हूँ कि आज आपने जो कर दिखाया है, वह इतिहास रचने के बराबर है ।"* धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही संगोष्ठी-कार्यशाला का औपचारिक समापन हुआ ।

संगोष्ठी-कार्यशाला में हिंदी विद्वानों, साहित्यकारों, प्राथमिक व माध्यमिक हिंदी शिक्षकों, प्राध्यापकों, विद्यार्थियों, हिंदी से जुड़ी संस्थाओं, धार्मिक संस्थाओं की प्रतिभागिता रही । इनमें मॉरीशस के प्रतिभागियों के अतिरिक्त भारत के स्वास्थ्य मंत्रालय से आए दो अधिकारी तथा मुंबई के *एकोल मोंज्याल* की हिंदी अध्यापिका भी शामिल थीं । इस आयोजन की सफ़लता में शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्रालय, भारतीय उच्चायोग, कला एवं संस्कृति मंत्रालय, उच्च-शिक्षा, विज्ञान, अनुसंधान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय, राजीव गाँधी साईंस सेंटर तथा इंदिरा गाँधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र का भी सहयोग रहा । संगोष्ठी-कार्यशाला का संचालन विश्व हिंदी सचिवालय के उप महासचिव तथा कार्यशाला संयोजक श्री गंगाधरसिंह सुखलाल ने किया ।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

ताशकंद में पाँचवा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन संपन्न

सृजन-सम्मान, छत्तीसगढ़ और प्रमोद वर्मा स्मृति संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में पाँचवा अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन 24 जून से 1 जुलाई तक सफ़लतापूर्वक संपन्न हुआ । मुख्य आयोजन उज़्बेकिस्तान की राजधानी, ऐतिहासिक शहर ताशकंद के होटल पार्क तूरियान के भव्य समागार में 26 जून को हुआ । उद्‌घाटन सत्र बुद्धिनाथ मिश्र (देहरादून) के मुख्य आतिथ्य एवं प्रवासी साहित्यकार डॉ. रेशमी रामधोनी (मॉरीशस) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । इस अवसर पर श्री हरिसुमन बिष्ट (सचिव, हिंदी अकादमी, दिल्ली), डॉ. शंभु बादल (सदस्य, साहित्य अकादमी), डॉ. पीयुष गुलेरी (पूर्व सदस्य, साहित्य अकादमी), डॉ. धनंजय सिंह, युवा कवि श्री एकांत श्रीवास्तव एवं निराला शिक्षण समिति, नागपुर के निदेशक डॉ. सूर्यकांत ठाकुर, आयोजन के प्रमुख समंवयक डॉ. जयप्रकाश मानस विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचस्थ थे ।

वरिष्ठ गीतकार व राजभाषा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य करने वाले डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने कहा कि *संस्कृति की आवश्यकता की प्रतिपूर्ति करने वाली हिंदी भाषा का विस्तार विश्व व मानव कल्याण के लिए एक अमोघ अस्त्र बन रहा है । उन्होंने कहा कि हिंदी विश्व की सिरमौर भाषा बनने की ओर अग्रसर है ।आज हिंदी साहित्य केवल भारत में ही नहीं लिखा जा रहा है, बल्कि तमाम देशों में पूरी ऊर्जा से रचा जा रहा है । इस प्रकार के सम्मेलन उस विराट साहित्य को समग्र रूप में प्रस्तुत करेंगे और भारत से बाहर रहकर प्रतिकूल परिस्थितियों में सृजन करने वाले रचनाकारों का हौसला बढ़ाएँगे ।*

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में मॉरीशस में महात्मा गाँधी संस्थान, स्कूल ऑफ़ इंडोलोजिकल स्टडीज़ की प्रमुख डॉ. रेशमी रामधोनी ने कहा कि *तकनीकी युग में उसी भाषा का अस्तित्व बना रहेगा जो मनुष्य की ज़रूरतों को पूरा करती हुई तकनीकी के साथ भी सह-अस्तित्व में रहेगी । हिंदी में अन्यान्य भाषाओं और बोलियों का महासागर बनने की असंदिग्ध क्षमता है, इसे समय भी सिद्ध करता आ रहा है ।*

3 रचनाकारों का सम्मान

सम्मेलन में नागपुर के युवा आलोचक और नागपुर विश्वविद्यालय के प्रो. प्रमोद शर्मा को प्रथम निराला काव्य सम्मान तथा सृजनगाथा सम्मान-2012 संतोष श्रीवास्तव (कथा लेखन में योगदान के लिए) एवं अहफ़ाज़ रशीद (ई-पत्रकारिता में योगदान के लिए) को प्रदान किया गया ।

28 कृतियों का विमोचन

इस सम्मेलन में एक साथ भारत के विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिष्ठित हिंदी रचनाकारों की 28 कृतियों का विमोचन किया गया जिनमें कविता-संग्रह, ग़ज़ल, नाटक, निबंध, संस्मरण, जीवनी, कहानी-संग्रह आदि शामिल हैं । इन रचनाओं के शीर्षक दिलचस्प तथा समारोह के प्रारंभ में डॉ. जयप्रकाश मानस ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन में अगले वर्ष से एक चयनित साहित्यकार को निराला शिक्षण समिति, नागपुर की ओर से 50,000 रुपए वाला निराला काव्य-सम्मान प्रदान किया जाएगा । उन्होंने पिछले चारों आयोजनों के बारे में भी विस्तृत जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि 6 वाँ अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन आगामी फ़रवरी 2013 में संयुक्त अरब अमीरत के दुबई, आबूधाबी, शारजाह में होगा।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन का गठन

सृजन-सम्मान द्वारा आयोजित होनेवाले अंतर्राष्ट्रीय आयोजन के निरंतर संचालन, समन्वय और लोकव्यापकीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन गठन का प्रस्ताव पारित करते हुए डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र को सर्वसम्मति से प्रथम अध्यक्ष और डॉ. जयप्रकाश मानस को समन्वयक के रूप में मनोनित किया गया । डॉ. गंगाप्रसाद विमल, खगेंद्र ठाकुर, विभूति नारायण राय, विश्वरंजन, सत्यनारायण शर्मा और धनंजय सिंह को सम्मेलन के संरक्षक के रूप में मनोनित किया गया । साथ ही दुनिया भर से इस नवगठित संस्था के पदाधिकारियों का चयन किया गया ।

आलोचना और उत्तर उपनिवेशक समय

सम्मेलन का दूसरा सत्र *आलोचना और उत्तर औपनिवेशक समय* पर केंदरित रहा । सत्र में हिंदी आलोचना और वर्तमान समय पर चर्चा करते हुए वक्ताओं ने हिंदी आलोचना के कई महत्वपूर्ण आयामों को स्पर्श किया । सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादमी के सदस्य, प्रसंग के संपादक व वरिष्ठ साहित्यकार शंभु बादल ने की । सत्र के प्रारंभ में प्रो. प्रमोद शर्मा ने कहा कि आज की आलोचना को रचनाओं और औपनिवेशक समय को भी समझना होगा । डॉ. प्रमोदनी हंसदा, डॉ. मुनीन्द्र सकलानी, डॉ. धनंजय सिंह तथा शंभू बादल ने अपने सारगर्भित एवं ज्ञानवर्धक विचार व्यक्त किए जिसके पश्चात सत्र के संचालक कहानीकार विवेक मिश्र ने हिंदी आलोचना के इतिहास और उसके उत्तर औपनिवेशिक समय तक के सफ़र को श्रोताओं के समक्ष रखा ।

भाषा और संस्कृति – एक दूसरे के रचयिता

भाषा की संस्कृति और संस्कृति की भाषा – इस पर एक खास सत्र रखा गया था और वक्ता के रूप में भारत के विभिन्न राज्यों के विश्वविद्यालयों के हिंदी विभाग प्रमुखों का चयन किया गया था । सत्र की अध्यक्षता डॉ. महेश दिवाकर ने की तथा विशिष्ट अतिथि थे - प्रो. रेशमी रामधोनी, दिवाकर भट्ट तथा डॉ. केसरीलाल वर्मा । सत्र के वक्ताओं में प्रमुख थे - डॉ. ओमप्रकाश सिंह, डॉ. कामराज सिंधु, डॉ. चंदा डिसूज़ा, डॉ. सुधीर शर्मा, डॉ. जंगबहादुर पांडेय, डॉ. खिरोधर यादव, डॉ.गीता सिंह, प्रभाकुमारी, डॉ. महासिंह पुनिया, डॉ. मीना कौल, डॉ. मिर्ज़ा हासम बेग, डॉ. सुनीति आचार्य तथा राजेश्वर आनदेव जिन्होंने अपने-अपने आलेखों का पाठ किया । सत्र का संचालन किया नेशनल बुक ट्रस्ट के संपादक और युवा कवि लालित्य ललित ने ।

ताशकंद में अंतर्राष्ट्रीय कथा पाठ

इसके पश्चात कहानी सत्र भी चला जिसमें बारह कहानियों का वाचन हुआ । हरिसुमन बिष्ट, डॉ. मुक्ता तथा मेजर रतन जांगिड़ ने इसकी अध्यक्षता की । इसमें *कौसानी में जैली फ़िश* (हरिसुमन बिष्ट), *बंधन* (मीठेश निर्मोही), *मारकणिया* (दिनेश पांचाल), *तिलचट्टा* (सुमन सारस्वत), *बुन्नू* (डॉ. सुजाता चौधरी), *आईने के पार* (डॉ. मुक्ता), *गुब्बारा* (विवेक मिश्र) आदि कहानियाँ श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत की गईं । तीन घंटे तक चले इस सत्र का संचालन अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन के महाराष्ट्र राज्य के उपाध्यक्ष व कथाकार संतोष श्रीवास्तव ने किया ।

50 से अधिक कवियों द्वारा कविता-पाठ

इस सम्मेलन का अंतिम सत्र मुख्य आकर्षण का केंद्र था । इसकी अध्यक्षता की वरिष्ठ कवि डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र ने और वरिष्ठ अतिथि थे वागर्थ के संपादक एकांत श्रीवास्तव तथा प्रगतिशील लेखक संघ राजस्थान के उपाध्यक्ष और वरिष्ठ कवि मीठेश निर्मोही । इस सत्र में शंभु बादल, डॉ. पीयूष गुलेरी, डॉ. ओमप्रकाश सिंह, लालित्य ललित, सुमन अग्रवाल, डॉ. महाश्वेता चतुर्वेदी आदि 50 से अधिक कवियों ने भिन्न शिल्प, छंद और सरोकारों की कविताएँ सुनाईं जो काव्य-प्रेमियों को अत्यधिक पसंद आईं । कई घंटों तक चले इस सत्र का संयुक्त संचालन शायर मुमताज़ और डॉ. देवमणि पांडेय ने किया । उक्त अवसर पर भारत के 137 साहित्यकार, लेखक, शिक्षक, पत्रकार, ब्लॉगर सहित ताशकंद शहर से बड़ी संख्या में साहित्यिक श्रोता उपस्थित थे । अधिक जानकारी के इच्छुक इस लिंक http://www.srijangatha.com/Halchal7Jul2012 पर सृजनगाथा पर सूचना प्राप्त कर सकते हैं ।

ताशकंद से एच.एस.ठाकुर की रिपोर्ट

हिंदी आई.टी. कोना

श्री लिपि से यूनीकोड और यूनीकोड से श्री लिपि

'' प्रकाशन करने वाले कई संस्थान श्रीलिपि फॉंट का उपयोग करते हैं । ये फॉंट दिखने में तो सुन्दर है मगर यूनीकोड नहीं होने के कारण इसे इंटरनेट पर नहीं देखा जा सकता । हिंदी के लिए समर्पित कुछ तकनीकी विशेषज्ञों ने इसका हल ढूंढ निकाला है । ''

इंटरनेट पर हिंदी के विकास के लिए सक्रिय और समर्पित लोग अपने स्तर पर लगातार प्रयास कर रहे हैं । ऐसे ही कुछ लोगों के श्रीलिपि से यूनीकोड के लिए एक परिवर्तक विकसित कर गूगल समूह पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली नामक पृष्ठ पर http://www.esagar.com/hindishrilipi.aspx उपलब्ध करा दिया है । उनके द्वारा विकसित यह कनवर्टर आप अपने कंप्यूटर में डाउनलोड कर सकते हैं या ऑनलाइन ही इसका उपयोग कर सकते हैं ।

ई–महाशब्दकोश

भारत सरकार के राजभाषा विभाग और सेंटर फ़ोर डिवलॉप्मेंट ऑफ़ ऐड्वंस कंप्यूटिंग (सी-डेक) ने मिलकर हिंदी अंग्रेज़ी का एक ऑनलाइन महाशब्दकोश तैयार किया है । इस महाशब्दकोश में हिंदी और अंग्रेज़ी के शब्दों के अर्थ देखे जा सकते हैं ।

सी-डेक ने वर्षों पहले इंटरनेट पर इस महाशब्दकोश का निर्माण किया था । इस पर अंग्रेज़ी और हिंदी शब्दों के अर्थ देखे जा सकते हैं । ये शब्दकोश इस लिंक पर http://www.e-mahashabdkosh.cdac.in/Interface.asp देखा जा सकता है ।

स्थापना दिवस पर इंटरनेट पर आई मणिपुर हिंदी परिषद

भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में ऐसी कई संस्थाएँ हैं जो हिंदी की अलख जगाए हुए हैं । इनमें से एक मणिपुर हिंदी परिषद ने अपना 59 वाँ स्थापना दिवस मनाया । इस अवसर पर परिषद की वेबसाईट का लोकार्पण भी किया गया ।

मणिपुर के चालीस से भी अधिक स्कूलों में हिंदी पढ़ाई जा रही है । मणिपुर हिंदी परिषद का उद्देश्य केवल हिंदी परीक्षा लेने तक ही सीमित नहीं है बल्कि परिषद हिंदी और मणिपुर भाषा के समन्वय और साहित्य के प्रसार का कार्य भी कर रही है । इस बात का ऐलान मणिपुर हिंदी परिषद के स्थापना दिवस के अवसर पर आयोजित समारोह में अतिथि वक्ताओं ने किया । परिषद के सभागार में हुए इस कार्यक्रम में मणिपुर साहित्य परिषद के अध्यक्ष प्रो. एलंगबाम दिनामानी और हिंदी शिक्षक केंद्र के अध्यक्ष डॉ. मैनाम अच्योबी विशेष रूप से उपस्थित थे ।

परिषद के सदस्यों ने अथक परिश्रम कर परिषद को इंटरनेट के माध्यम से पूरे विश्व के हिंदी भाषी समाज से जोड़ दिया है । स्थापना दिवस के समारोह में उपस्थित अतिथियों ने परिषद की वेबसाईट का लोकार्पण भी किया । इस अवसर पर परिषद के अध्यक्ष अनोबाम बिनोदचंद्रा और महासचिव डॉ. लेंचेंबा मताई ने परिषद के संस्थापकों को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की । उन्होंने कहा कि परिषद अपनी इस साईट के माध्यम से और बेहतर कार्य कर सकेगी ।

हिंदी होमपेज से साभार

माइक्रोसॉफ्ट हिंदी टाइपिंग टूल

माइक्रोसॉफ्ट का यह औज़ार हिंदी टाइपिंग को थोड़ा और आसान बना देता है । इसे आप अपने कंप्यूटर में डालकर ऑन्लाइन और ऑफ़लाइन दोनों ही स्थिति में हिंदी टंकन कर सकते हैं । फ़ोनेटिक टाइपिंग ने हिंदी टाइपिंग को आसान बना दिया है । कुंजीपटल पर हिंदी के अक्षर और मात्राएँ याद नहीं रखने वाले लोग भी इसके माध्यम से अपना काम चला सकते हैं । हिंदी टाइपिंग के लिए माइक्रोसॉफ्ट का यह औज़ार बहुत ही आसान और उपयोगी है । हिंदी के कुछ कठिन शब्दों को भी इससे बड़ी आसानी से लिखा जा सकता है । यदि आप विंडोस सेवन, विस्टा या एक्सपी का प्रयोग करते हैं तो इस टाइपिंग टूल का प्रयोग कर सकते हैं ।

Microsoft® Indic Language Input Tool

http://www.bhashaindia.com/ilit/

योगदान– रघुनाथ सिंह ठाकुर

महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस में तीन हिंदी पुस्तकों का लोकार्पण

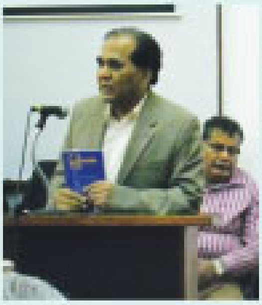

मॉरीशस के प्रसिद्ध कवि व महात्मा गांधी संस्थान में सृजनात्मक लेखन विभाग के सह-संपादक श्री राज हीरामन के काव्य-संग्रह *नेहा की निधि*, उनकी स्वर्गीय पत्नी नमिता सती सावित्री द्वारा संकलित *"कविताएं जो छप न सकीं-(भाग 2)"* व उनकी बेटी निधि हीरामन द्वारा लेखक पर प्रकाशित आलेखों का संकलन *"पत्र पत्रिकाओं में राज हीरामन"* कृतियों का शनिवार 7 जुलाई को मोका स्थित महात्मा गांधी संस्थान के सुब्रमण्य भारती सभागार में भव्य लोकार्पण हुआ। समारोह के मुख्य अतिथि रहे गणराज्य के उप-प्रधान व सार्वजनिक मूलढाँचा मंत्री माननीय श्री अनिल कुमार बेचू, विशिष्ट अतिथियों में कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी, महात्मा गाँधी संस्थान व रवींद्रनाथ टैगोर संस्थान के महानिदेशक श्री विजयकुमार मधु, विश्व हिंदी सचिवालय के कार्यवाहक महासचिव श्री गंगाधरसिंह सुखलाल व मानव सेवा निधि तथा गोपिओ मॉरीशस के प्रधान श्री प्रेमचंद बुझावन जी शामिल थे।

उप प्रधान व सार्वजनिक मूलढाँचा मंत्री अनिल बेचू ने राज हीरामन की कुछ रचनाओं का सुंदर वाचन करते हुए अपने ओजस्वी वक्तव्य में लेखक हीरामन की सराहना की कि *वे एक ऐसे लेखक हैं जो न सिर्फ लगातार लेखन कर रहे हैं अपितु हिंदी के प्रति इनकी निष्ठा इनके घर-परिवार से आरंभ होती है और इन्होंने अपने घर में हिंदी का ऐसा वातावरण उत्पन्न किया कि आज उनकी बेटी भी हिंदी में लिख रही है व संभवत: मॉरीशस में हिंदी में पुस्तक प्रकाशित करने वाली सबसे युवा लेखिका बनी हैं।* उन्होंने देश की सामाजिक सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रति अपनी अपील दोहराई कि *हिंदी के लिए कार्यरत संस्थाओं को अपने सार्वजनिक मंच से इसी प्रतिबद्धता के साथ हिंदी को बढ़ावा देने की भरपूर कोशिश करनी चाहिए और इस बात की ओर ध्यान देना चाहिए कि उनके मंच से बोलने वाले हिंदी भाषा का प्रयोग करें।*

माननीयअनिल बेचू जी की तरह ही माननीय कला एवं संस्कृति मंत्री श्री मुकेश्वर चुनी ने लेखक राज हीरामन के साथ अपने लंबे संबंध की चर्चा करते हुए लेखक की कठिन यात्रा की याद दिलाई और हिंदी के प्रति लेखक की निष्ठा की सराहना की। उन्होंने यह रेखांकित किया कि *सरकार की ओर से आज लेखकों-कलाकारों को प्रकाशन, प्रस्तुति व अन्य कार्यक्रमों के लिए अभूतपूर्व सुविधाएँ दी जा रही हैं; यहाँ तक कि लेखकों को दी जाने वाली सहायता राशि को दुगुना करते हुए उसे तीस हजार मॉरीशसीय रुपए तक बढ़ा दिया गया है।*

मंच संचालन स्वयं कवि हीरामन जी कर रहे थे और उन्होंने अपने उद्घोष में हिंदी के प्रति निष्ठा, समर्पण और प्रतिबद्धता को अपना बीज मंत्र बनाया। कवि के अनुसार यह समारोह तीन पुस्तकों का लोकार्पण मात्र नहीं है, बल्कि हिंदी के प्रति समर्पित लोगों का जुटाव है जो चाहे मंत्री पद पर हों, लेखक हों, धार्मिक संस्थाओं के प्रधान हों, पुरोहित हों, या परिवार के सदस्य हों, हिंदी के उन्नयन के लिए प्रतिबद्ध रूप से कार्यरत हैं। राज हीरामन जी ने अपनी कुछ कविताओं का वाचन किया और अपनी स्वर्गीय पत्नी की स्मृति में पिरोया हुआ एक गीत भी सुनाया जो उनके कंठ और सभागार को भावुक कर गया।

हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता का एक उदाहरण लेखक की दोनों बेटियों निधि और नेहा ने दिया। निधि ने अपने पिता पर पत्रों आदि में प्रकाशित सामग्री को पुस्तकाकार देने की योजना पर बात की और कहा कि इंग्लैंड में पढ़ाई करते हुए भी उसने अपने पारिवारिक संस्कारों के चलते अपनी पुस्तक हिंदी में लिखी है। दूसरी ओर नेहा हीरामन ने *कविताएँ जो छप न सकीं- (भाग दो)* संकलन से एक रचना का पाठ करने के उपरांत अगले वर्ष स्वयं की हिंदी पुस्तक प्रकाशित करने की योजना उजागर की।

लोकार्पण समारोह में देश के वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामदेव धुरंधर, भानुमति नागदान, हेमराज सुंदर, धनराज शंभु, महात्मा गांधी संस्थान के प्राध्यापक गण, डॉ. रेशमी रामधोनी, श्री रामफल, भोजपुरी संस्थान से डॉ. सरिता बुधु, सनातन धर्म टेंपल्स फ़ेडरेशन के प्रधान श्री सोमदत्त दलतमन, तमिल स्पीकिंग यूनियन के अध्यक्ष डॉ. चेमेन, मराठा मंदिर के मुख्याचार्य श्री महादू, श्री विश्वनाथ केरिमन, पत्रकार, लेखक सहित अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

'मॉरीशस के भोजपुरी कविता संग्रह' का लोकापर्ण

मॉरीशस में भोजपुरी साहित्य के विकास पर दृष्टिपात करेंगे तो देखते है यह वाचिक परंपरा के अंतर्गत विकसित हुआ। मौखिक रूप से यह विरासत पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित होता गया। ऐसे में हमेशा से लिखित रूप में भोजपुरी साहित्य सृजन कम ही रहा। इस दिशा में मॉरीशस के राष्ट्रीय कवि माननीय श्री ब्रजेन्द्र कुमार भगत *मधुकर* का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनके *मधु कलश*, *मधु-बहार* और *मधुलिका* भोजपुरी साहित्य के अमर संग्रह माने जाते हैं। भोजपुरी कविता के क्षेत्र में डॉ. मुनीश्वरलाल चिंतामणि, श्री दयानंदलाल वसंत रॉय, डॉ. रामदिन, श्री अभिमन्यु अनत, श्री वासुदेव मोहन, रुद्रदत्त पोखन, नारायणदत्त भीखी का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सराहनीय योगदान रहा।

महात्मा गांधी संस्थान के भोजपुरी एवं लोक संस्कृति की ओर से मॉरीशस का पहला भोजपुरी कविता संग्रह प्रकाशित होना यहाँ पर भोजपुरी साहित्य के इतिहास में एक नव युग की शुरूआत कही जा सकती है। ***मॉरीशस के भोजपुरी कविता संग्रह*** का लोकापर्ण 8 जून 2012 को महात्मा गांधी संस्थान में हुआ। उसमें मॉरीशस के पचास कवियों की भोजपुरी कविताएं संकलित हैं। इस योजना में महात्मा गांधी संस्थान के भोजपुरी एवं लोक संस्कृति विभाग से अरविंद बिसेसर और सृजनात्मक लेखन एवं प्रकाशन विभाग से डॉ. हेमराज सुंदर मुख्य संपादक सहित सहायक सम्पादकों, डॉ. गौतमी भगत रामयाद, डॉ.जयचंद्र लालबिहारी, जयगणेश दाओसिंह, संध्या अन्चाराज और चंद्रदेव ओबिलक का हाथ रहा है।

इस भोजपुरी कविता संग्रह में विषयों की विविधता उल्लेखनीय है। मॉरीशस का इतिहास हमारे पूर्वजों की कथा-व्यथा, देश-प्रेम, भोजपुरी भाषा की महिमा, सामाजिक विषय-युवा वर्ग, प्रकृति चित्रण, हास्य-व्यंग्य आदि विषय प्रमुख हैं। इस संकलन में भोजपुरी साहित्य की निजी पहचान स्थापित हुई है और उभरते युवा कवियों को अपनी मातृ-भाषा में लिखने का सुअवसर प्रदान किया गया।

मॉरीशस के भोजपुरी कविता-संग्रह के लोकार्पण के साथ-साथ पहली बार के लिए मॉरीशसीय भोजपुरी कवियों के लिए एक कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस कवि सम्मेलन की पहली कविता सोनम परतोब ने प्रस्तुत की। सोनम की तरह कई कॉलेज की छात्राओं की कविताओं का श्रवण करने का मौका मिला। कवि सम्मेलन में मॉरीशस के जाने-माने हिंदी साहित्यकारों ने भी भाग लिया। जहां तक लिखित भोजपुरी साहित्य सृजन का प्रश्न है बहुत लोगों के लिए यह पहला अनुभव रहा।

औपचारिक वक्तव्यों में शिक्षा एवं मानव संसाधन मंत्री डॉ. वसंत कुमार बनवारी ने मॉरीशस में भोजपुरी साहित्य को युवा पीढ़ी तक ले जाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि जब से उनकी मंत्रालय की पहल पर हमारी पाठशालाओं में भोजपुरी की पढ़ाई शुरु हुई है तब से भोजपुरी में नई स्फूर्ति आयी है। मंत्री जी ने भोजपुरी साहित्य और उससे जुड़ी परंपरा की सुरक्षा पर बल दिया।

महात्मा गांधी संस्थान के महानिदेशक श्री बिजय मधु ने मॉरीशस के स्वतंत्रता संघर्ष में भोजपुरी के योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने भोजपुरी साहित्य के विकास के लिए महात्मा गांधी संस्थान की भूमिका पर ज़ोर दिया और भविष्य में स्थानीय कलाकारों और साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने के लिए परियोजनाओं पर बल दिया।

महात्मा गांधी संस्थान और रविन्द्रनाथ टैगोर संस्थान के प्रशासनिक समिटि के अध्यक्ष श्री रविन द्वारका ने भोजपुरी के ऐतिहासिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए भविष्य में इस भाषा के सही मानक रूप को विकसित करने की मांग की और अन्य साहित्यिक विधाओं को प्रकाशित करने के लिए अन्य संस्थाओं की ओर से योगदान का आश्वासन दिया। संयोग की बात है कि लोकापर्ण समारोह में झारखण्ड के विधान सभा के स्पीकर और बिहार भोजपुरी अकादेमी के अध्यक्ष श्री रविकांत दुबे भी उपस्थित रहे। उन्होंने इसे एक सराहनीय कदम बताते हुए विश्व स्तर पर भोजपुरी के विकास के लिए मॉरीशस की भूमिका पर बात की।

कविता संग्रह के लोकार्पण के साथ, भोजपुरी कविताओं का रसास्वादन भी हुआ। साथ में इन कविताओं को दुनिया भर के पाठकों तक ले जाने के लिए एक ब्लोग भी बनाया गया है।

उस ब्लॉग को महात्मा गांधी संस्थान के भोजपुरी विभाग के अरविंद बिसेसर और विवेक बिन्दा ने बनाया है, जिसे इस लिंक पर देखा जा सकता है। http://moribhojpuri.blogspot.com/

उल्लेखनीय है कि उन्हें इस ब्लॉग को बनाने का विचार विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित कार्यशाला के दौरान मिला जहां पर प्रतिभागियों को हिंदी साहित्य के विकास के लिए विभिन्न पहलुओं में प्रशिक्षित किया गया। इस ब्लॉग में कविताएं सुनने का भी प्रावधान है।

महात्मा गाँधी संस्थान से श्री अरविंद बिसेसर की रिपोर्ट

शारजाह में काव्य-संध्या का सुरुचिपूर्ण आयोजन

शारजाह, 7 जून 2012, की शाम साढ़े साथ बजे श्री प्रवीण सक्सेना के निवास स्थान पर, सुरुचिपूर्ण साजसज्जा के बीच एक मनमोहक काव्य संध्या का सफल आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री विश्वंभरनाथ पांडेय राहगीर बनारसी थे । वयोवृद्ध स्वतंत्रता सेनानी और हिंदी तथा भोजपुरी साहित्य में लोक कवि के रूप में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले, अनेक सम्मानों से सुशोभित श्री राहगीर बनारसी जी पिछले कुछ दिनों से इमारात में अपनी बेटी के पास रह रहे हैं । अनेक बार विश्व का भ्रमण कर चुके इस अनोखे रचनाकार ने अपने रोचक अनुभव सुनाकर उपस्थित श्रोताओं का मन मोह लिया ।

कार्यक्रम का आरंभ डैरिक रोस्टन ने अपनी मधुर आवाज में सरस्वती वंदना से किया, सबने एक दूसरे का परिचय प्राप्त किया । दो प्रमुख वक्ताओं कुलभूषण व्यास ने प्रेरक कविताओं के संग्रह की योजना और अभिमन्यु गिरि ने सितंबर माह में होने वाली हिंदी प्रसार सभा की परियोजनाओं की सूचना दी जो उपस्थित हिंदी प्रेमियों के लिए अत्यंत हर्ष की बात थी । पिछले अनेक सालों से ये दोनों हिंदी प्रेमी, भाषा के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं । पूर्णिमा वर्मन ने संचालक के पद से बोलते हुए कहा कि अब संयुक्त अरब इमारात के हिंदी कवियों का एक संकलन निकलने का समय आ पहुंचा है और आने वाले सितंबर तक इसे तैयार हो जाना चाहिए ।

कविता पाठ का आरंभ श्री नंदी मेहता ने किया इसके बाद अभिमन्यु गिरि, कुलभूषण व्यास, राजन सब्बरवाल , धर्मेन्द्र चौहान , डैरिक रोस्टन, मनोज शर्मा, राहुल तनेजा, श्रीमती अमृता कौर, मीरा ठाकुर, श्री एन.एच. मोजने, पूर्णिमा वर्मन तथा अंत में राहगीर बनारसी सभी ने अपनी-अपनी रचनाओं का पाठ किया । कार्यक्रम में श्रीमती स्वरूप राय, श्रीमती कामना कटोच, श्रीमती मंजु सिंह, मीरा ठाकुर, श्रीमती शालू चिपा, श्रीमती ऋचा गौतम, श्रीमती मीना, श्री प्रवीण सक्सेना तथा अनुभव व इला गौतम सहित भारतीय विद्यालयों के लगभग 40 हिंदी अध्यापक एवं उनके परिवार उपस्थित थे । यह गोष्ठी रात 11 बजे तक सानंद चलती रही ।

साभार- अभिव्यक्ति

चीन के एक और विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाएगी हिंदी

चीन में अब एक और विश्वविद्यालय हिंदी की पढ़ाई का केंद्र बनने जा रहा है । चीन में हिंदी का यह नया सफ़र दक्षिणी चीन में स्थित गैंगडांग विश्वविद्यालय की विदेशी अध्ययनशाला से शुरू होगा । इस विश्वविद्यालय में हिंदी की पीठ स्थापित करने के लिए भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों ने एक सहमती पत्र पर हस्ताक्षर किए ।

भारत और चीन के बीच बढ़ते व्यापारिक संबंधों के चलते अब चीनी युवाओं को हिंदी में काफ़ी संभावनाएँ नज़र आ रही हैं । बेइजिंग के पीकिंग विश्वविद्यालय सहित चीन में कुल पाँच विश्वविद्यालयों में पहले से ही हिंदी का विभाग पीठ स्थापित है । इसके अलावा चीन स्थित भारतीय दूतावास भी हर रविवार को गुरुकुल नामक एक कक्षा के माध्यम से हिंदी की शिक्षा दे रहा है । गैंगडांग में स्थापित इस पीठ में सुश्री लता अय्यर विभागाध्यक्ष का प्रभार संभालेंगी जबकि सुंदरराजन, मनीषा भाकरे, कृष्ण दासगुप्ता और दीपा तुलसीदास शिक्षक की भूमिका निभाएँगी ।

कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय में लगेगा हिंदी का विशेष प्रशिक्षण शिविर

अमेरिका में रहने वाले भारतीय परिवारों की नई पीढ़ी को हिंदी से जोड़ने के लिए *कैवि* यानी कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय एक खास पहल करने जा रहा है । जून के आखरी सप्ताह में यहाँ स्कूली बच्चों के लिए एक महीने का हिंदी उर्दू शिविर लगाया जाएगा । इसमें विशेष पद्धति से हिंदी और समझाई जाएगी । इसके लिए अमेरिका की सरकार ने कैवि को खास अनुदान दिया है ।

इस शिविर की सबसे खास बात यह है कि इसमें हिंदी पढ़ाने के लिए किताबों का नहीं बल्कि चित्रों, ओडियो-वीडियो तथा अन्य माध्यमों का उपयोग किया जाएगा । कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय के हिंदी उर्दू विभाग द्वारा आयोजित इस शिविर में भारतीय मूल के आठवीं से बारहवीं तक के बच्चे भाग ले सकते हैं । ये शिविर 26 जून से शुरू होकर 26 जुलाई तक चलेगा । शिविर की संयोजिका और कैवि में हिंदी की प्राध्यापक सुश्री अंशु जैन ने बताया कि इसका आयोजन अमेरिकी सरकार की एक योजना के तहत किया जा रहा है । इस शिविर में सुश्री अनछु तथा सुश्री किरण इन स्कूली बच्चों को हिंदी और उर्दू का प्रशिक्षण देंगे ।

नार्वे का हिंदी लेखन समृद्ध है

साहित्य अकादमी दिल्ली में प्रवासी मंच के तहत नार्वे से पधारे प्रवासी साहित्यकार और *परिचय* (1980-1985) और *स्पाइल -दर्पण* (1988 से) के संपादक सुरेशचन्द्र शुक्ल ने नार्वे में हिंदी लेखन पर व्याख्यान दिया । कार्यक्रम का शुभारम्भ साहित्य अकादमी के डॉ. ब्रिजेन्द्र त्रिपाठी द्वारा प्रवासी मंच और प्रवासी मंच में व्याख्यान देने वाले साहित्यकार का परिचय देकर किया । कार्यक्रम में दिल्ली विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय, साहित्य अकादमी के सदस्यों के अतिरिक्त प्रसिद्ध विद्वान डॉ. कमल किशोर गोयनका, डॉ. विनोद सेठ, अमर उजाला के हरी प्रकाश राष्ट्र किंकर के संपादक और नार्वे पर संस्मरण-पुस्तक *इब्सेन के देश में* के लेखक विनोद बब्बर, *वैश्विका* साप्ताहिक के संपादक, संजय मिश्र, *स्पाइल-दर्पण* दिल्ली के प्रतिनिधि और संपादक मंडल के सदस्य डॉ. सत्येन्द्र कुमार सेठी और अन्य लोगों ने प्रश्नोत्तर के दौरान सक्रिय भागीदारी से व्याख्यानमाला को बहुत रोचक बना दिया ।

सुरेशचंद्र शुक्ल ने अपने व्याख्यान में नार्वे मूल से नार्वेजीय भाषा और हिंदी मूल से नार्वेजीय भाषा में अनुवाद पर ओस्लो में होने वाले सेमीनार, मासिक लेखक गोष्ठियों तथा हिंदी भाषियों और क्षेत्रों के लिए लेखन कार्यशाला में नार्वे के हिंदी लेखन मंच, भारतीय-नार्वेजीय सूचना एवं सांकृतिक फोरम नार्वे के कार्यों पर प्रकाश डाला ।

उन्होंने भारतीय, प्रवासी संस्थाओं द्वारा की जा रही हिंदी, पंजाबी और अन्य भारतीय भाषाओं की सेवा के लिए किए जा रहे कार्यों पर संतोष व्यक्त करते हुए उसे सराहनीय बताया । सुरेशचंद्र शुक्ल ने अपनी सम्पादित प्रवासी कहानियों के संकलनों *प्रतिनिधि प्रवासी कहानियां* और *समसामयिक प्रवासी कहानियाँ* सहित नार्वे के प्रवासी लेखकों के कहानी संग्रहों में स्वर्गीय हरचरण चावला का कहानी संग्रह *आखिरी कदम से पहले* और सुरेशचंद्र शुक्ल का कहानी संग्रह *अर्द्धरात्रि का सूरज* को खास बताया तथा यात्रा वृत्तान्त में सन् 1973 को वन्दे मातरम् प्रेस लखनऊ से छपी डॉ. राजेंद्र प्रसाद शुक्ल की पुस्तक *मेरी साइकिल यात्रा* को यात्रा साहित्य में विशिष्ट बताया ।

नार्वे के लेखकों की खास पुस्तकों जो हिंदी साहित्य में चर्चित रही वे हैं स्वर्गीय पूर्णिमा चावला की पुस्तक *कभी-कभी लगता है* और सुरेश चन्द्र शुक्ल की काव्य पुस्तकों *रजनी* (1984), *नंगे पांवों का सुख* (1986), *नीड़ में फंसे पंख* (1999), और *गंगा से ग्लोमा तक* (2010)। संगीता शुक्ल सीमोन्सेन की हिंदी की पाठ्य पुस्तक भी सराहनीय है जो हिंदी स्कूल नार्वे में पढ़ाई जाती है । ओस्लो विश्व विद्यालय के प्रो. जोलर द्वारा हिंदी का डाटाबेस भी एक उत्कृष्ट कार्य है ।

सुरेशचन्द्र शुक्ल शरद आलोक

दो बाल-गीत संग्रहों का विमोचन

साहित्यकार कृष्ण कुमार यादव और आकांक्षा यादव के बाल-गीत संग्रह 'जंगल में क्रिकेट' एवं 'चाँद पर पानी' का विमोचन पूर्व राज्यपाल डॉ. भीष्म नारायण सिंह और डॉ. रत्नाकर पांडेय (पूर्व सांसद) ने राष्ट्रभाषा स्वाभिमान न्यास एवं भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, नई दिल्ली द्वारा गाँधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में किया । इस अवसर पर दोनों संग्रहों का विमोचन करते हुए अपने उद्बोधन में पूर्व राज्यपाल श्री सिंह ने युगल दंपति की हिंदी साहित्य के प्रति समर्पण की सराहना की । उन्होंने कहा कि बाल-साहित्य बच्चों में स्वस्थ संस्कार रोपता है, अतः इसे बढ़ावा दिए जाने की जरूरत है ।

पूर्व सांसद डॉ. रत्नाकर पांडेय ने युवा पीढ़ी में साहित्य के प्रति बढ़ती अरुचि पर चिंता जताते हुए कहा कि, यह प्रसन्नता का विषय है कि भारतीय डाक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी होते हुए भी श्री यादव अपनी जड़ों को नहीं भूले हैं और यह बात उनकी कविताओं में भी झलकती है । युगल दंपति के बाल-गीत संग्रह की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि इसमें आज का बचपन है और बीते कल का भी और यही बात इन संग्रह को महत्वपूर्ण बनाती है । आभार ज्ञापन उद्योग नगर प्रकाशन के विकास मिश्र द्वारा किया गया । इस कार्यक्रम में साहित्यकार, बुद्धिजीवी, पत्रकार इत्यादि उपस्थित थे ।

सृजनगाथा से साभार

फिजी के समाचार माध्यमों की सुर्खियों में है हिंदी सीखने वाली युवती

विश्व के कई देश ऐसे है जहाँ हिंदी सीखना सम्मान की बात है । कभी-कभी इन देशों में हिंदी बोलनेवाले लोग समाचारों की सुर्खियों में भी जगह बना लेते हैं । फिजी में पिछले दिनों ऐसा ही हुआ । फोटो में नमस्कार की मुद्रा में हाथ जोड़कर खड़ी ये दोनों युवतियाँ पिछले दिनों फिजी के समाचार माध्यमों में सुर्खियों में हैं । इनमें से एक लूसियाना - बाएँ हाथ पर – है उनकी सहपाठी का नाम रेशमी लता है । ये दोनों युवतियाँ हाल ही में भारत सरकार की छात्रवृत्ति पर हिंदी की पढ़ाई करके लौटी है।

लूसियाना, आईतौकाई समुदाय (फिजी के मूल निवासियों का समुदाय) से है । वैसे तो फिजी में हजारों हिंदी भाषी है मगर इस समुदाय में हिंदी बोलने और समझने वालों की संख्या काफी कम है । इस समुदाय में लूसियाना पहली युवती है जिसने हिंदी में इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त की है । यही कारण है कि जब वो अपने देश पहुँची तो मीडिया ने उसे खूब सम्मान दिया । लूसियाना का कहना है कि वो जहाँ रहती है उसके आसपास काफी संख्या में आप्रवासी भारतीय रहते हैं । उनसे बेहतर संवाद स्थापित करने के लिए ही उसने हिंदी सीखी है ।

स्रोत – फिजी टाइम्स

हिंदी संगठन की कुछ प्रमुख गतिविधियाँ

हिंदी भाषा का उन्नयन ही हिंदी संगठन का एक मात्र लक्ष्य है और निरंतर यह कई राष्ट्रीय कार्यक्रम आयोजित करती है । हाल में कुछ प्रमुख गतिविधियाँ आयोजित हुई जिनमें हिंदी पुस्तक मेला, नाटक, संगीत दिवस, आदि शामिल हैं । विश्व पुस्तक के संदर्भ में अप्रैल माह में विश्व भर में अनेक गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं । हिंदी संगठन ने इस वर्ष विश्व पुस्तक दिवस के संदर्भ में सभी वर्गों के लिए भारत से हज़ारों की संख्या में हिंदी की पुस्तकें मंगवाई और देश के विभिन्न गाँवों व शहरों में हिंदी पुस्तक मेले का सफलतापूर्वक आयोजन किया जिनमें हज़ारों की संख्या में छोटे-बड़े, सभी ने भाग लेकर अपनी दिलचस्पी दिखाई । इस वर्ष के मई माह में प्राथमिक कक्षा के छात्रों के लिए हिंदी नाटक प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें लगभग 25 पाठशालाओं द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर नाटक का मंचन हुआ । बच्चों ने न केवल हिंदी भाषा में प्रवाहपूर्ण अभिव्यक्ति की, अपितु बहुत अच्छी नातक कला का भी प्रदर्शन किया । जून माह में माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए संगीत दिवस के संदर्भ में गायन प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें लगभग 20 कॉलेजों के छात्रों ने अपनी भागीदारी दी । हिंदी संगठन ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए हिंदी टंकन प्रशिक्षण प्रारंभ किया जिसमें 150 से भी अधिक लोग भाग ले रहे हैं । छात्रों के अलावा शिक्षक भी प्रशिक्षण ले रहे हैं ।

इस प्रकार हिंदी संगठन इन सभी गतिविधियों के माध्यम से हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए नित्य कार्यरत है ।

राजनारायण गति

जर्मनी में हिंदी का *बसेरा*

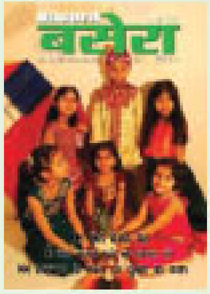

भारत के अलावा विश्व में ऐसे कई देश है जहाँ से हिंदी की पत्रिकाएँ प्रकाशित होती हैं । बसेरा एक ऐसी पत्रिका है जो जर्मनी से निकलती है । ये द्विभाषी पत्रिका है यानी हिंदी और जर्मन दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती है ।

म्यूनिख में रहनेवाले हिंदी प्रेमी युवा श्री रजनीश मंगला पिछले कई सालों से वहाँ हिंदी और जर्मनी भाषा में बसेरा नामक पत्रिका निकाल रहे हैं । इस पत्रिका के माध्यम से वे जर्मनी में बसे हिंदी भाषियों को जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं ।

रजनीश, इंटरनेट पर हिंदी को बढ़ावा देने के लिए भी बेहद समर्पित भाव से कार्यरत हैं । नेट पर हिंदी की ज़्यादा से ज़्यादा उपयोगी सामग्री दी जा सके इसके लिए फ़ेसबुक, यूट्यूब, व्यक्तिगत ब्लॉग आदि स्थलों में वे अपनी सक्रिय भागिदारी दे रहे हैं ।

हिंदी होमपेज से साभार

'प्रतिध्वनियाँ' पर समीक्षात्मक विवेचन

मॉरीशस के वरिष्ठ साहित्यकार श्री इंद्रदेव भोला *इंद्रनाथ* की नई काव्य कृति *'प्रतिध्वनियाँ'* पर समीक्षात्मक रूप से विवेचन करने के लिए एक साहित्यिक गोष्ठी का आयोजन भारतीय उच्चायोग के तत्वावधान में 'साहित्य संवाद' के अंतर्गत शनिवार 28 अप्रैल 2012 को इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, फेनिक्स, में हुआ । इस गोष्ठी में इंद्रनाथ जी की 'प्रतिध्वनियाँ' काव्य पर बोलनेवाले प्रमुख वक्ता थे श्रीमती कल्पना लालजी और श्री विष्णुदत्त मधु ।

श्रीमती लालजी ने बताया कि *"इंद्रनाथ जी कवि होने के साथ कथाकार, निबंधकार, इतिहासकार और संपादक भी हैं । सन् 1961 से आज तक आप हिंदी लेखक संघ के कार्यभार को अपने कंधों पर बड़ी मज़बूती से उठाये हुए हैं । यदि हम कहें कि हिंदी लेखक संघ और इंद्रदेव जी एक दूसरे के पूरक हैं तो अतिशयोक्ति नहीं होगी । इंद्रनाथ जी की 'प्रतिध्वनियाँ' काव्य में 222 कविताएँ संकलित हैं । यदि इन कविताओं को विभिन्न विषयों पर बांटा जाए तो पाएँगे कि देश-प्रेम का गुंजन इनकी कविताओं में अधिक हुआ है, हमारे पूर्वज, मज़दूर तथा प्राकृतिक सौंदर्य के साथ साथ सामाजिक विषय भी हैं ।"*

श्री विष्णुदत्त मधु ने अपने वक्तव्य को आरंभ करते हुए कहा – *"'प्रतिध्वनियाँ' एक अनुकरणीय, प्रशंसनीय काव्य है जिसमें महाकाव्य की कलात्मक सर्जना प्रतिध्वनित होती है । कवि इंद्रदेव ने विश्व काव्य साहित्य को एक अनुपम भण्डार दिया । क्रांति, देश-भक्ति, राष्ट्रीयता, मिट्टी की गंध आदि प्रतिध्वनित हो जागरण पैदा करती है । इसमें अनुभूति का सागर है ।"*

हिंदी लेखक संघ के प्रधान ने कहा कि इंद्रदेव का पहला कविता-संग्रह 'वरदान' शीर्षक से सन् 1972 में छपा था ।

'प्रतिध्वनियाँ' की प्रस्तावना हॉलैण्ड की सुप्रसिद्ध कवयित्री प्रो. पुष्पिता अवस्थी ने लिखी है ।

हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री अजामिल माताबदल ने मौके पर इंद्रनाथ की पुस्तक से *आँसू भी मिले* कविता पढ़कर श्रोताओं को मुग्ध कर दिया । अंत में श्री इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ ने देश-भक्ति से पूर्ण *तीरंगा थामें* कविता का पाठ किया ।

विवरण प्रस्तुति– इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ

'सूरीनाम में हिंदुस्तानी' पुस्तक का लोकार्पण

18 अप्रैल 2012 को सूरीनाम के पारामारीबो जिले में **'सूरीनाम में हिंदुस्तानी'** पुस्तक का लोकार्पण किया गया। भारत के राजदूतावास और सूरीनाम साहित्य मित्र संस्था के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय आप्रवासी संघ (NSHI) के भवन लालारुख में आयोजित इस कार्यक्रम में भारत के राजदूत श्री कंवलजीत सिंह सोढ़ी, मुख्य अतिथि के रूप में सूरीनाम के शिक्षा व संस्कृति मंत्रालय के निदेशक श्री स्टेनली सिदूल, सूरीनाम साहित्य मित्र संस्था के अध्यक्ष पंडित हरिदेव सहतू के अतिरिक्त, भारत में सूरीनाम के भूतपूर्व राजदूत श्री कृष्णदत्त बैजनाथ व सूरीनाम की सभी हिंदुस्तानी संस्थाओं के अध्यक्ष तथा- सूरीनाम हिंदी परिषद के अध्यक्ष श्री भोलानाथ नारायण, सांस्कृतिक संघ सूरीनाम के अध्यक्ष श्री अश्विन अधीन, सनातन धर्म महासभा के अध्यक्ष डॉ. नन्नन पाण्डेय, संस्था आर्य दिवाकर के अध्यक्ष पंडित इंद्रदत्त तिलकधारी, संस्था माता गौरी के अध्यक्ष श्री संत राम खुसियाल, जाने माने सरनामी साहित्यकार डॉ. जीत नाराइन व अनेक साहित्यकार और गण्य मान्य व्यक्ति व हिंदी समर्थक उपस्थित थे।

सूरीनाम के शिक्षा व संस्कृति मंत्रालय के निदेशक श्री स्टेनली सिदूल ने इस प्रयास के लिए लेखिका श्रीमती भावना सक्सैना को बधाई देते हुए कहा कि यह पुस्तक सूरीनाम के लिए राष्ट्रीय महत्व की है। इस वक्तव्य का समर्थन सूरीनाम हिंदी परिषद के अध्यक्ष श्री भोलानाथ नारायण ने किया और कहा कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक बहुत लाभदायक रहेगी तथा सूरीनाम के बारे में इस प्रकार की बृहत शोधात्मक पुस्तक पहली बार तैयार हुई है।

कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। भारत के राजदूत महामहिम श्री कंवलजीत सिंह सोढ़ी जी ने सभी का स्वागत किया और कहा – *"हिंदी विश्व को सूरीनाम के साहित्यकारों से परिचित कराने का यह प्रयास सराहनीय है। इस पुस्तक के लिए किया गया कार्य श्रमसाध्य है। प्रणबद्ध हो किए गए इस प्रयास के लिए मैं श्रीमती भावना सक्सैना को बधाई देता हूँ।"*

पुस्तक चार भागों में विभाजित है – देश और भाषा, साहित्य, संस्कृति और साक्षात्कारों के आईने में। इस पुस्तक के तीसरे खंड *साहित्य* के अंतर्गत 27 कवियों व लेखकों का परिचय दिया गया है और सूरीनाम में हिंदी में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं का उल्लेख भी किया गया है। पुस्तक में हिंदी के विकास, वर्तमान स्थिति, सरनामी हिंदी के बारे में जानकारी के साथ साथ संगीत, नृत्य, धार्मिक स्थलों की जानकारी और कुछ विशिष्ट व्यक्तियों के साक्षात्कार हैं।

यह पुस्तक सूरीनाम में हिंदुस्तानी वंशजों व हिंदी भाषा की स्थिति के साथ-साथ यहाँ के कलाकारों व लेखकों का वर्णन करती है। पुस्तक के पिछले आवरण पर संक्षिप्त समीक्षाएं दी गई हैं जिसमें वरिष्ठ हिंदी सेवी व सूरीनाम हिंदी परिषद के पूर्व निदेशक और साहित्य मित्रा संस्था के मौजूदा निदेशक पंडित हरिदेव सहतू जी ने कहा है – *"इ पुस्तक देख कर हमारा बड़का सपना पूरा हो गइल बा। हृदय से बधाई है।"*

प्रतिष्ठित सरनामी कवि डॉ. जीत नाराइन के अनुसार –*"यह पुस्तक बहुत सुव्यवस्थित व संगठित रूप में प्रस्तुत की गयी है और विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभदायक रहेगी।"*

कार्यक्रम का कुशल संचालन हिंदी सेविका सुश्री निशा झाकरी ने किया। पुस्तक की लेखिका श्रीमती भावना सक्सैना ने पुस्तक पर चर्चा की और श्रोताओं को पुस्तक की विषयवस्तु के बारे में जानकारी दी। उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि *यह सूरीनाम के हिंदुस्तानियों की पुस्तक है और मेरी ओर से एक छोटा सा प्रयास है उन पूर्वजों को श्रद्धांजलि अर्पित करने का जिनके श्रम से आज सूरीनाम की धरती महक रही है, और उन सभी संस्थाओं व व्यक्तियों के प्रति आभार, सम्मान प्रकट करने का जो आज भी अपनी संस्कृति को सींच रहे हैं और पोषित कर रहे हैं।* पुस्तक के आवरण पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि सूरीनाम के मानचित्र पर फूलों से लदा "बाबा माई" का चित्र एक प्रतीक है उस सम्मान का जो सूरीनाम में हिंदुस्तानियों ने पाया और कमाया है।

सूरीनाम के प्रसिद्ध बैठक गाना गायक श्री हरी शिवबालक ने अपना प्रसिद्ध गीत- *सूरीनाम करके नारायण का ले बजरंगबली को नाम/ कथा बखानूं सूरीनाम की जिस पर हमको है अभिमान* सुनाया। और अंत में कवि, संगीतकार व भजनीक श्री देवानंद ने अपना लिखा गीत - *कलकतिया में लागल मेला अरकटिया करे गुहार* प्रस्तुत किया। इस भावपूर्ण गीत से सभी की आँखें नम हो गयी।

(भारतीय राजदूतावास, पारामारीबो के सौजन्य से)

भावना सक्सैना

सूरीनाम में महाकवि पंत जी की जयंती

18 मई को हिंदी के महाकवि सुमित्रानंदन पंत की जयंती थी। इस अवसर पर सूरीनाम में एक खास कार्यक्रम आयोजित किया गया। भारत के दूतावास और सांस्कृतिक केंद्र के बुलावे पर पारामारिबो में रहने वाले कई अनिवासी भारतीय और अन्य हिंदी प्रेमी छायावाद के इस प्रमुख स्तंभ को याद करने के लिए इकट्ठा हुए। रचनात्मकता से भरपूर इस आयोजन में सूरीनाम के विद्यार्थियों ने पहले महाकवि पंत के जीवन से जुड़ी स्मृतियों को भाषण के रूप में प्रस्तुत किया फिर पंतजी की कविताएँ पढ़ी और एक नाटक का मंचन भी किया। इस कार्यक्रम में भारत के राजदूत श्री कंवलजीत सिंह सोढ़ी, हिंदी विद्वान डॉ. नारायणदत्त गंगाराम पांडेय और दूतावास में हिंदी व संस्कृति अताशे श्रीमती भावना सक्सेना विशेष रूप से उपस्थित थे।

श्री सोढ़ी ने अपने वक्तव्य में पंत जी के साहित्य से जुड़ी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का उल्लेख किया जबकि डॉ. नारायणदत्त गंगाराम पांडेय ने छायावाद पर प्रकाश डाला। श्रीमती सक्सेना ने कहा कि *पिछले कुछ वर्षों से सूरीनाम में हिंदी के श्रेष्ठ कवियों और लेखकों पर केंद्रित कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इनके माध्यम से यहाँ के हिंदी प्रेमी लोगों को हिंदी के महान साहित्यकारों से परिचित होने का अवसर भी मिल रहा है और हिंदी साहित्य रचना के लिए प्रेरणा भी।* सुमित्रानंदन पंत के संकलन '*पल्लव*' का उल्लेख करते हुए उन्होंने उसका एक उद्धरण पढ़ा और कहा कि *कोई भी भाषा अथवा शब्द गूढ़ या कठिन नहीं होते, सिर्फ परिचित या अपरिचित होते हैं, जो हमें गूढ़ लगता है वह वास्तव में अपरिचित होता है अतः भाषा का निरंतर प्रयोग उसे परिचित व सहज बनाता है।*

हिंदी होमपेज से साभार

श्रद्धांजलि

डॉ. गौतम सचदेव

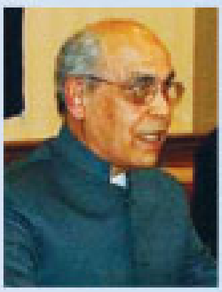

ब्रिटेन स्थित हिंदी साहित्यकार डॉक्टर गौतम सचदेव की 7 जुलाई 2012 को हृदयगति रुकने से मृत्यु हो गई। गौतम सचदेव का जन्म 8 जून 1939 को पाकिस्तान में पंजाब प्रांत के मंडी वारबर्टन नामक स्थान पर हुआ था। विभाजन के बाद उनका परिवार भारत चला आया। 1982 में उन्होंने बीबीसी हिंदी सेवा के लंदन मुख्यालय में प्रसारक के रूप में काम करना शुरू किया। इसके पूर्व उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन किया था। उनके पी.एच.डी. का विषय प्रेमचंद के लेखन पर आधारित था।

गौतम सचदेव ब्रिटेन में बसे हिंदी साहित्यकारों में जाने-माने हस्ति थे। हिंदी, उर्दू, पंजाबी और संस्कृत के अच्छे जानकार, डॉ. सचदेव ने हिंदी के अलावा उर्दू में भी साहित्य रचा है। उनकी कविताओं के कई संग्रह प्रकाशित हुए जिनमें *सूरज की पंखुड़ियाँ, त्रिवेणी, बूँद-बूँद आकाश, एक और आत्मसमर्पण* आदि शामिल हैं। उनके दो कहानी संग्रहों का भी प्रकाशन हुआ है। इनके अतिरिक्त भारतीय समाचार पत्रों में उनके लेख नियमित रूप से प्रकाशित होते आए हैं। डॉ. गौतम सचदेव को कई पुरस्कार मिले जिनमें ब्रिटेन में रहनेवाले हिंदी साहित्यकारों को दिया जानेवाला प्रतिष्ठित पुरस्कार पद्मानंद साहित्य सम्मान शामिल है।

याहू जागरण से साभार

विश्व हिंदी सचिवालय की ओर से डॉ. गौतम सचदेव को श्रद्धांजलि।

संपादकीय

पिताजी का लैपटॉप और कुछ अन्य बातें...

विश्व हिंदी समाचार का यह नया अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हर अंक की प्रस्तुति के समान हर्ष तो हो ही रहा है, इस बार उत्साह की एक अनिर्वचनीय अनुभूति भी है । इस उत्साह का कारण खोजने के लिए दूर नहीं जाना होगा, सूचनापत्र के इस अंक के पन्ने यदि आप प्रारंभ से पलटते हुए इस संपादकीय तक पहुँचे हैं तो आप भी संभवतः उसकी अनुभूति कर रहे होंगे ।

ये पन्ने इस बात का प्रमाण दे रहे हैं कि विश्व हिंदी जगत आज अपूर्व क्रियाशीलता और गतिशीलता से सराबोर है.... क्रियाशीलता और गतिशीलता इतनी कि सूचनापत्र के ये पन्ने सीमा में बंधे, शर्मींदा से लगने लगे हैं ।

एक ओर भारतीय राष्ट्रपति द्वारा भारत और विदेश के हिंदी सेवियों को सम्मान की खबर है जिससे विदेशों में बसे हिंदी सेवियों का उत्साहवर्धन होता है तो दूसरी ओर ताशकंद में अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सम्मेलन की सराहनीय सफलता जो विश्व भाषा के रूप में हिंदी की प्रबलता का द्योतक है...तुर्की, कैलिफोर्निया, जर्मनी, नोर्वे, सूरीनाम और चीन आदि से हिंदी लेखन-शिक्षण से जुड़ी खबरें भी हैं । एक और उत्साहवर्धक बात यह है कि हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ी गतिविधियाँ और प्रयास अब दुक्के नहीं बल्कि दर्जनों में आने लगे हैं । जिसके चलते हमने इस सूचनापत्र का एक पन्ना हिंदी और आए-टी, के नाम कर दिया है । और मॉरीशस में प्रतिष्ठित लेखक राज हीरामन की बेटी ने भी हिंदी लेखन की दुनिया में प्रवेश किया और अपनी प्रथम पुस्तक का विमोचन किया । स्पष्ट और स्वाभाविक रूप से हिंदी परिवार बड़ा हो रहा है । दुखद खबर यह है कि इस बड़े परिवार ने अपना एक बहुत ही मेधावी और समर्पित अग्रज खो दिया और सूचनापत्र का यह अंक डॉ. गौतम सचदेव को श्रद्धांजलि भी देता है ।

इस सब के बीच सचिवालय की अपनी गतिविधियाँ जिनमें प्रमुख रूप से सचिवालय की कार्यकारिणी बोर्ड की तीसरी बैठक, अप्रैल में हिंदी और सूचना प्रौद्योगिकी पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला तथा आप सभी के साथ बेहतर संपर्क के लिए सचिवालय के वेबसाइट का लोकर्पण ।

यह तो उतना जितना हम समेट पाए, जितना हम लिख पाए...दुर्भाग्य कि ये पन्ने विश्व हिंदी समुदाय की तरह नित्य प्रसरनशील नहीं है इस लिए इनको हिंदी जगत की वास्तविक क्रियाशीलता का अनुगमन करने में कठिनाई हो रही है । आशा है निकट भविष्य में सचिवालय का वेबसाइट इस कमी को पूरा कर पाएगा क्योंकि भविष्य में भी क्रियाशीलता में किसी धीमेपन की कोई भी आशंका नहीं है । दो महीने बाद ही वैश्विक हिंदी के महाकुंभ के लिए दक्षिण अफ्रिका में हिंदी जगत आमंत्रित हो चुका है ।

इन सभी सूचनाओं के मध्य आप सभी से एक सुंदर अनुभव भी बांटने की कामना है ।

मेरे पिताजी ने एक लैपटॉप खरीद लिया और घर पर लाकर बोले 'मुझे हिंदी में टंकण सिखाओ!!!' अद्‌भुत था वह अनुभव, पिताजी के साथ बैठका में हम और आधा गाँव हिंदी पढ़े थे, आज वे हमको हिंदी से जुड़ा कुछ सिखाने के लिए कह रहे थे । वैसा ही अनुभव जैसा की साइकल चलाना सिखाया पिताजी ने और जब हम बड़े हुए तो उनको गाड़ी चलाना हम सिखाने लगे...

कुछ ऐसा ही अनुभव पिछले अप्रैल महीने में हुआ जब विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा हिंदी आई.सी.टी पर कार्यशाला के अंतर्गत देश के कुछ वरिष्ठ साहित्यकारों व अध्यापकों, सरकारी अधिकारियों, आचार्यों तथा युवा छात्र-छात्राओं की काफी बड़ी टोली ने एक साथ हिंदी और कंप्यूटर के संबंध को समझाने से प्रारंभ करते हुए अपने ब्लॉग निर्माण तक का प्रशिक्षण प्राप्त किया । कार्यशाला के संचालन के लिए मॉरीशस पधारे पूर्णिमा वर्मन सक्सेना, बालेन्दु शर्मा दाधीच और ललित कुमार जी से हमने कहा कि प्रशिक्षण एकदम आरंभ से करना होगा, इसलिए प्रथम दिन सभी प्रतिभागियों के लैपटॉप पर हिंदी टंकण के सॉफ्टवेर बिठाने और प्रतिभागियों को टंकण सिखाने के लिए निर्धारित किया गया ।

कार्यशाला में बीस से सत्तर वर्ष की आयु वाले प्रतिभागी थे । कुछ बीस वाले ऐसे जिनके लिए लैपटॉप खिलौना है और कुछ सत्तर वाले ऐसे जिनके लिए यह उपकरण शीशे सी नाजुक अथवा राक्षस सा भयानक था । हिचक व आत्मविश्वास का अभाव स्वाभाविक था । लेकिन पहले दिन की दोपहर तक आते-आते बुजुर्गों की हर टोली के बीच एक युवा छात्र बैठा दिखाई दिया । लैपटॉप पर टंकण सॉफ्टवेर लग गए और श्यामपट पर हमको हिंदी के पहले अक्षर लिखवाने वाले अध्यापकों ने एक वर्ड दस्तावेज़ पर पहली बार स्वंय अपना-अपना नाम लिखा...

आंखें चमक रही थीं...

इस चमक में एक बात स्पष्ट हुई । हिंदी आज अपनी उपस्थिति एक नए आयाम में स्थापित कर रही है जो पुरानी पीढ़ी की तुलना में नई पीढ़ी के लिए अधिक सुलभ है। यह भी एक जेनेरेशन गैप जैसी स्थिति उत्पन्न करती है जहाँ दो पीढ़ियाँ अलग आयामों में और बहुधा अलग-अलग विषयों को ध्यान में रखकर अपनी अभिव्यक्ति कर रही होती है । ऐसे में हिंदी जगत के समक्ष यह चुनौती है कि वह इस खाई को पाटे ताकि वह चाहे कितने ही आयामों में उपस्थित हो, उसकी संपूर्ण सेना, अपनी अखण्डता में एक साथ मार्च करे...

अभियान का समय है मित्रो, जिन्होंने श्यामपट पर अक्षर लिखना सिखाया उनको कीबोर्ड पर अक्षर लिखवाना एक प्रकार की गुरुदक्षिणा होगी । जिन्होंने हमको साइकल चलाना सिखाया उनको गाड़ी के ज़माने में पीछे नहीं छूटने देना चाहिए । हिंदी की पीढ़ियाँ कितनी ही क्यों न हो... गति एक ही होनी चाहिए ।

मैं पिताजी को सिखाउंगा, सचिवालय अपना अभियान आरंभ कर चुका है ... आप भी साथ हो लें...

श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
उपमहासचिव

विश्व हिंदी पत्रिका : 2012 के लिए आलेख भेजें

विश्व हिंदी सचिवालय प्रतिवर्ष 'विश्व हिंदी पत्रिका' का प्रकाशन करता है जिसमें वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की स्थिति, हिंदी का उद्‌भव और विकास, हिंदी के क्षेत्र में हो रही गतिविधियाँ तथा अनुसंधान, हिंदी शिक्षण और अधिगम से संबंधित आवश्यक व मार्गदर्शक शोध उजागर होते हैं। 'विश्व हिंदी पत्रिका' के तीन अंक प्रकाशित हो चुके हैं जो हमारे वेबसाईट www.vishwahindi.com पर उपलब्ध हैं । आपसे अनुरोध है कि 'विश्व हिंदी पत्रिका : 2012' के लिए अपना लेख जल्द से जल्द विश्व हिंदी सचिवालय को भेजने की कृपा करें । लेख 2500 शब्द संख्या का होना चाहिए । मौलिक तथा अप्रकाशित लेखों के लिए $150 (एक सौ पचास) अमेरिकी डॉलर मानदेय होगा । आप अपना लेख डाक अथवा ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं । साथ ही अपना संक्षिप्त परिचय, एक पासपोर्ट आकार फोटो एवं लेख के मौलिक तथा अप्रकाशित होने का प्रमाण पत्र भी साथ में भेजें । हमारा ईमेल है info@vishwahindi.com ।

प्रधान संपादक
श्रीमती पूनम जुनेजा
संपादक
श्री गंगाधरसिंह सुखलाल
संपादन सहयोग
श्री जिष्णु होरिशरण, सुश्री श्रद्धांजलि हजगैबी
सुश्री प्रीति सियांबर, श्रीमती विजया सरजु
विश्व हिंदी सचिवालय
स्विफ्ट लेन, फ़ॉरेस्ट साइड, मॉरीशस
World Hindi Secretariat
Swift Lane, Forest Side, Mauritius
Phone (230) 676 1196
Fax (230) 676 1224
E-mail : info@vishwahindi.com
Website : www.vishwahindi.com
Printed by
BAHADOOR PRINTING LTD.
Avenue St. Vincent de Paul - Pailles
Tel: 208 1317